ADAT VYAPARI EDUCATION SOCIETY'S
DEGLOOR COLLEGE, DEGLOOR

ISSN 2394-5303

International Multilingual Research Journal

Printing Area

Issue-40, Vol-06, April 2018

Editor
Dr.Bapu G.Gholap

Dr. Anil Chidrawar
I/C Principal
A.V. Education Society's
Degloor College, Degloor Dist.Nanded

ISSN: 2394 5303 | Impact Factor 5.011(IIJIF) | Printing Area™ International Research journal | April 2018 Issue-40, Vol-06 | 01

UGC Approved
Jr.No.43053

आंतरराष्ट्रीय बहुभाषिक शोध पत्रिका

प्रिंटिंग एरिया

Printing Area International Interdisciplinary Research Journal in Marathi, Hindi & English Languages

April 2018, Issue-40, Vol-06

Editor
Dr. Bapu g. Gholap
(M.A.Mar.& Pol.Sci.,B.Ed.Ph.D.NET.)

Co-Editor
Dr. Ravindranath Kewat
(M.A. Ph.D.)

"Printed by: **Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.** Published by **Ghodke Archana Rajendra** & Printed & published at Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.,At.Post. Limbaganesh Dist,Beed -431122 (Maharashtra) and Editor **Dr. Gholap Bapu Ganpat.**

Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205

Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.
At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed
Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295
harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com
All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors / www.vidyawarta.com

27) संत तुकाराम के काव्य व्यक्त सांप्रदायिक सद्भाव
डॉ. सतोष विजय येरावार, जि.नांदेड || 116

28) गुप्त काल में विज्ञान एवं तकनीकि का विकास
डॉ० राजेश कुमार यादव, बाराबंकी || 119

29) डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल के उपन्यासों में चित्रित नारी के विविध रूप
अशोक पी. वाणवी, राजकोट || 122

30) हरित विपणन
डा. आर.एस. बांगड़, भीलवाड़ा (राज.) || 127

31) "सर्वशिक्षा अभियान के अन्तर्गत थानेसर ब्लॉक की शहरी शिक्षा...
हुकम चन्द, कुरूक्षेत्र || 130

32) इन्दौर एवं खण्डवा जिले में स्वर्ण जयंती ग्राम स्वरोजगार योजना में ऋण...
डॉ. राजीव कुमार झालानी & डॉ. संजीव जटाले, इन्दौर || 135

33) नाजिश प्रतापगढ़ी की शायरी में राष्ट्रीय एकता
डॉ. मोहम्मद जुबैर, हैदराबाद || 138

34) कुमाउनी के श्रेष्ठ किन्तु अज्ञात कवि कृपालु दत्त जोशी (१८७५—...
कृष्ण चन्द्र मिश्रा 'कपिल', नैनीताल || 140

35) कौटिलीय अर्थशास्त्र में सुशासन की अवधारणा
डॉ० वीणा गोपाल मिश्रा, गोरखपुर || 147

36) महाकवि कुमारदास कृत जानकीहरण में वात्सल्य वर्णन
डॉ. रमेशचन्द्र मुरारी, फतेपुरा दाहोद (गुजरात) || 153

37) छत्तीसगढ़ के संप्रेषण गृह अन्त:वासी बालकों का समाजशास्त्रीय अध्ययन
डॉ० अजय कुमार प्रजापति, रायपुर || 155

38) कुमायूँ मण्डल के पर्वतीय एवं मैदानी क्षेत्रों में माध्यमिक स्तर पर बा...
बबीता देवी, राजस्थान || 160

www.vidyawarta.com/03 | http://www.printingarea.blogspot.com

27

संत तूकाराम के काव्य व्यक्त सांप्रदायिक सद्‌भाव

डॉ. सतोष विजय चेरावार
हिन्दी विभाग प्रमुख,
देगलूर महाविद्यालय देगलूर, ता.देगलूर जि.नांदेड

****

सांप्रदायिकता ने मनुष्य के सोच को बौना एवं कलुषित बना दिया हैं | धर्म, संप्रदाय, जाति, भाषा, प्रांत, वर्ग, एवं वर्ग के नामपर बेकसुर अवाम को मारा जा रहा हैं | अपने स्वार्थ की रोटि रोखने के लिए दंगल, घृणा, विरोध एवं तिरस्कार को बढावा दिया जा रहा हैं | राष्ट्रीय एकात्मता को खंडित करनेवाला सांप्रदायिकता एक तत्व हैं जो राष्ट्र, समाज एवं मानव के बीच अमानवीय दुरियाँ बढा रहा हैं | सशक्त राष्ट्र के लिए एवं खुशहाल मानव के लिए सांप्रदायिक सदभाव अत्यंत आवश्यक हैं | संत साहित्य ने सांप्रदायिक पर करार प्रहार किया हैं | संत तुकाराम ने अपने काव्य के माध्यम से सापंदायिकता सद्‌भाव बढाने का सफल प्रयास किया हैं | संत तुकाराम का काव्य आज प्रासंगिक बन पडता है | धार्मिक क्षेत्र में व्याप्त आडंबर, कर्मकांड, अनीति, को भी अपने काव्य मे उघाडा है |

आधुनिक युग की सबसे बडी समस्या हिंन्दू और मुसलमानों में सांप्रदायिकता के आधार पर आपसी विवाद रही है | आज हिंन्दू और मुसलमानों मे सांप्रदायिक दंगे फसाद हो रहे हैं, वे दोनों भाई-भाई होते हुए भी एक दूसरे से दूर हो रहे है | वास्तविक देखा जाय तो हिन्दू या मुसलमान सभी एक जैसे हैं दोनों का भी खून लाल होता है, दोनों का भी जनम एक ही स्थन से होता है | परंतु यह सब होते हुए भी आज इन दोनों में आपसी मतभेद क्यों है ? यही आज के युग की गहन समस्या है जो मध्यकाल से चली आ रही है |

मध्ययुगीन भारत पर मुसलमानों की सल्तनत थी | महाराष्ट्र कभी भी इस्लाम के अधीन नहीं था | फिर भी हिंदवी स्वराज्य की स्थापना शिवाजी द्वारा होने से पहले मुसलमानी राजसत्ता धर्म, भाषा और संस्कृति के अधीन हिन्दुस्तान के समान महाराष्ट्र भी था, इस बात को मानना चाहिए | शिवाजी और अन्य वीरों के साथ तुकाराम के समान अन्य मराठी संतों ने स्वधर्म, स्वभाषा और स्वयंस्कृति का संरक्षण किया | फिर भी हिन्दू धर्म से कोई ब्राह्मण और क्षत्रिय सत्ता के लोभ से धर्मांतर करते थे | उनकी धर्म संबंधी विकृत कल्पना थी | वे भक्ति के नाम पर माथे पर तिलक, भसम, गले में जनेऊ पहनकर लोगों की ऑखों में धूल डालते थे | वे पथभ्रष्ट हो चुके थे | चर्म का पाजामा पहनकर अधिकार ग्रहन करने वालों की तुकाराम ने कटु आलोचना की है |[१] क्योंकि वे मूलतः हिन्दू होकर भी धर्मांतर करने के पश्चात मुसलमान बनकर हिन्दुओं को पीडा देते रहे | यही ब्राह्मण धर्म को ध्वंस कर रहे थे और ब्राह्मण धर्म छोडकर राम-राम की जगह पर दोम-दोम कह रहे थे |[२] इस काल में मुसलमानों ने हिन्दुओं को जोर जबरदस्ती से और लालची लोगों को सत्ता का प्रलोभन दिखाकर धर्मांतरण को प्रोत्साहन करते थे | मुसलमानों की सल्तनत होने के कारण लोग उन्हे देवता समझते थे |

तुकाराम का कहना था कि, चंडालों का स्पर्श हो जाने से धर्म भ्रष्ट नही होता, परंतु मन में भेदभाव रखने से धर्म नष्ट हो जाता है |[३]

उच्च वर्ण और कनिष्ठ वर्ण की जो मूलत की भूमिका है वह कभी भी खंडित नही होती, दोनों भी एक ही भूमि पर चलते रहे हैं |[४] तुकाराम का मत है कि, मस्जिद और मंदिर में जाकर मूर्ति को प्रणाम और खुदा को सिजदा करने से सत्य की झलक ईश्वर अल्लाह की झलक प्राप्त नही हो सकती | रोजा करने, नमाज पढने, काबे और हज की यात्रा करके कुछ भी साध्य न होगा | ईश्वर का निवास मंदिर मस्जिद में नही, मन में है | अगर ईश्वर मंदिर-मस्जिद में है तो इस जगत की रक्षा कौन करेगा ? शेष संसार का स्वामी कौन है ? ये सारी बातें निस्सार और असंगत हैं | मन का भ्रम दूर कने से अल्लाह और ईश्वर एक ही लगेगा | इसके लिए दोनों धर्मो को बाह्य औपचारिकता छोडकर अभ्यंतर ज्हदय में सत्य की खोज करनी चाहिए, तभी स्त्री-पुरुष , हिंन्दू-मुस्लिम आदि के भेद मिट जायेंगे | तुकाराम ने सभी धर्मो को सभी वर्णो को बाह्याडम्बर का त्याग कर केवल हरि के शरण में जाने की बात की है. क्योंकि नामस्मरण पर सबका समान अधिकार है |[५]

अर्थात तुकाराम हिन्दू और मुसलमानों में कोई भेद मानने के पक्ष में नही थे | वे चाहते हैं कि, सभी जाति एवं धर्म के लोग एक समान है इसलिए समाज में प्रचलित हिन्दू-मुसलमान का भेद उन्हें अमान्य था |

वर्तमान युग की भी यही आवश्यकता है कि, हिन्दू और मुसलमानों में भाईचारा निर्माण होना चाहिए | आज भारत सरकार भी हिन्दू और मुसलमानों को समान रखकर उनमें आपसी भेदभाव दूर करने का प्रयास करती है |

ADAT VYAPARI EDUCATION SOCIETY'S DEGLOOR COLLEGE DEGLOOR Dist. Nanded

संत तुकाराम कालीन समाज में कथनी के अनुरुप करनी नहीं किया करते थे जिस कारण समाज में झूठा व्यवहार करने वालों की संख्या बढने लगी | तुकाराम का मत है कि, हितकारी कथन को केवल कह देना ही पर्याप्त नही, उन्हें आचरण मे, व्यवहार में लाना भी आवश्क है | उनका सबसे महान उपदेश है -- बोले तैसा चाले, त्याची वंदावी पाउले | अपने कान को जो व्यवहार में लाता है, तुकाराम उनका सेवक बनने के लए प्रस्तुत है | समाज में लोग दूसरों को परमार्थ की बात करने वाले बहुत हैं परंतु उसे व्यवहार में लाना कठिन हो जाता है | वे कहते भी है -

बोल बोलता वाटे सोपे | करणी करिता ठीर कापे ||[६]

तत्कालीन युग में बोलते सुधारकों की मात्रा अधिक थी परंतु आज उसमें इजाफा हो गया है | अर्थात जो व्यक्ति वाणी से केवल कहता है परंतु उसे कार्य रुप में परिणम नही करता, उसको कौन विश्वस करेगा ? समाज में आदर्श व्यक्तित्व प्राप्त करने के लिए कथनी के अनुरुप करनी, करनी पडती है | तुकाराम विठ्ठल से हमेशा प्रार्थना किया करते थे - जैसा मुख से कहलाते हो उसी प्रकार का मुझे स्वयं अनुभव होने दो | अन्यथा फजीहत का ठिकाना नही | बिना नमक के बनाया हुआ भोजन किस काम का ? बिना जान की लाश को सिंगारने से क्या फायदा ? स्वांग बनाया पर उसके अनुरुप यदि आचरण न हो तो लाभ ही क्या ? दूल्हा-दुल्हन के न रहते विवाह की सब तैयारियाँ की जायँ तो पैसे का फजलू खर्च है |[७] वे कथनी करनी में एका की आवश्कता पर बल देते हूए कहते हैं

जैसी वानी वैसी करनी श्रध्दा उस पर जडती है |

क्रियाशुन्य वाचाल विषय में जमी हुई भी उडती है ||
जैसा कहता वैसा चलता, लोग उसे आदराते है |
ऐसे की उपेदशक से जन सभी एक से डरते है ||[८]

अर्थात - जो व्यक्ति जैसा बोलता है और वैसा ही आचरण करता है उस पर समाज की श्रध्दा निर्माण होती है तथा क्रियाशून्य व्यक्ति की प्रतिष्ठा भी उड जाती है | जो व्यक्ति कथनी के अनुरुप करनी करते हैं उसी को लोग इज्जत या सराहना करते हैं |

तुकाराम का कहना है कि, जिस व्यक्ति का आचरण अन्य लोगों को उपदेश करने योग्य न हो तो उसका समाज में नगण्य स्थान होता है | जैसे

कथनी पठनी करुनि काय,
वाचुनि रहणी वाया जाय |[९]

समाज में लोगों का संबंध एक-दुसरे के साथ आता रहता है | समाज में वही लोग श्रेष्ठ एवं अमर बनते हैं जो स्वयं कथनी के अनुरुप करनी करते हैं | वे कहते भी हैं --

तुका म्हणे जैसी वाणी | तैसा मनी परिपाक ||[१०]

वर्तमान युग में कथनी-करनी में अंतर करने वाले राजनीति में अधिक मोहरे मिल जाते हैं | वे लोगों को बडे-बडे आश्वासन तो देते हैं परंतु उसकी पूर्ति नहीं करते | उसी प्रकार कथा, कीर्तन, प्रवचनों के माध्यम से महाराज लोक उपदेश करते है परंतू करनी में शुन्य होते है | प्रवचनों के माध्यम से प्रेमभाव दिखाते है परंतु उनके अंतरंग में कुकर्मो का सागर लहराता है ऐसे लोगों के लिए तुकाराम कहते है |

कथा करुनियाँ दावी प्रेमकला | अंतरी जिव्हाळा कुकर्माचा,
तुका म्हणं ऐसे मावेचे महंद | त्यापाशी गोविंद नाही-नाही ||[११]

अर्थात कथनी के अनुरुप करनी न करने वाले लोगों में ईश्वर का निवास नही होता |

सारांशत: हम कह सकते है कि, कथनी और करनी में सामंजस्य तुकाराम के उपदेश का प्रमुख हिस्सा था | उनके इन उपदेशों की प्रासंगिकता आज के विघटनकारी समाज के लिए अधिक उभर कर आयी है | अत: तुकाराम को विश्वास था कि, वाणी तथा कर्म की असमानता अन्ततः भयंकर यंत्रणा का कारण बनेगी | आज की तथाकथित प्रजातांत्रिक प्रणाली में वोट की राजनीति के कारण नई-नई सामाजिक समस्याएँ निर्माण हुई है | जिनका मिलाजुला परिणाम आज हमारे सामने है | आज झूठ बोलने वाला मनुष्य श्रेष्ठ कहलाता है और कथनी - करनी में अंतर लाने वाला ही धन संचय करके समाज में उच्च स्थान पर विराजमान हो जाता है | तुकाराम ने अपने समाज में आँखों देखी बात अपने अभंग के माध्यम से हमारे सामने पेश की है जो आज भी प्रासंगिक है |

धर्म एक अफीम का नशा है जो मनुष्य के मस्तिष्क पर चढता रहता है | तुकाराम ने अपने काव्य में धर्म एवं धर्म से संबंधित लगभग सभी विषयों पर अनकानेक अभंग कहे है | धर्म एवं उसके तत्वों की सांगोपांग विवेचना का उद्देश्य लेकर वे काव्य रचना में प्रवृत्त नहीं हुए, पर फिर भी आश्रम धर्म की मर्यादा, अतिथि सत्कार, सदाचरण, परोपकार, प्राणिमात्र के प्रति सहानुभूति एवं दया, आत्मसंयम, निष्काम कर्म और प्रारब्ध

इत्यादि अनेक विषयों पर विचाराभिव्यक्ति हुई है | तुकाराम ने धर्म के अंतर्गत आत्मसंयम और चित्तशुध्दि पर अत्याधिक बल दिया है | उन्होंने कर्तव्य भावना से प्रेरित होकर, शुभाशुभ परिणाम का भार ईश्वर को सौंपते हुए, निष्काम भाव से कर्म करने का उपदेश दिया है | उनके अनुसार चित्तशुध्दि के अभाव में बाह्याचार का पालन करने वाला साधु-संन्यासी एक सामान्य गृहस्थ की अपेक्षा कही हीन है |

तुकाराम युगीन समाज में उच्चवर्णीय धर्म के नाम पर सामान्य

DEGLOOR COLLEGE, DEGLOOR Dist.Nanded

लोगों का शोषण करते थे | तत्कालीन समाज में बाह्याडम्बर, धार्मिक अंधविश्वास, मूर्तिपूजा, तीर्थाटन, अवतार की कल्पना, बहुदेवोपासना तथा धार्मिक रुढि परम्पराओं का आचरण किया जाता था | तुकाराम ने आँखों देखी बात को ही अपने अभंग का विषय बनाया हैं |

मध्ययुगीन समाज में उच्च वर्णीय लोगों को ही शिक्षा ग्रहण करने का अधिकार होने के कारण सामान्य लोग शिक्षा से कोसों दूर रहकर अज्ञानी, अनपढ ही रहे थे | इसी कारण समाज में सामाजिक विषमता निर्माण हुई | उच्चवर्णीय लोगों ने अज्ञानी, अनपढ जनता को गुमराह करके उसका नाजायज फायदा उठाकर उनका धर्म के नाम पर शोषण किया |

संत तुकाराम ईश्वर के सगुण रुप के उपासक होते हुए भी उन्होंने समाज में प्रचलित बाह्य कर्मकांड का कडा विरोध कर केवल ईश्वर के नामस्मरण पर बल दिया है | तत्कालीन युग में तीर्थाटन और पवित्र जल के स्नानादि को भक्ति मार्ग का सहायक तत्व मानते हुए भी उन्हे उसकी उपादियता पर संदेह है क्योंकि पवित्र जल के स्पर्श मात्र से ही मन के विकार दूर नहीं हो जाते | अगर मन ही मैला हो तो केवल शरीर को साबून से मल-मलकर धोने से क्या लाभ ? जैसे --

काय काशी करिती गंगा
भीतरी चंगा नाही तो | [१२]

अर्थात - ईश्वर को प्राप्त करने के लिए काशी-तीरथ जाने की आवश्यकता नही है | ईश्वर मनुष्य के अंतरमन में निहित है उसे तीर्थो में ढूँढने की आवश्यकता नही हैं | अत: अंतरंग में प्रेमभाव की आवश्यकता हैं|

तत्कालीन युगीन समाज में लोग तिलक, माला, मुद्रा एवं भगवा वस्त्र आदि धारण करते हुए स्वयं को ईश्वर का भक्त मानते थे | तुकाराम ने इन बाह्य उपकरणें का विरोध करते हुए आन्तरिक शुचिता पर बल दिया है | नामकरण की महिमा से अनभिज्ञ परंतु उच्च ध्वनि से शंखनाद करने वाले व्यक्ति को फटकारते हुए वे कहते है कि - इतकी जोर से शंख बजाने का क्या लाभ ?

न जाने यह मूढ सबके मन मंदिर में निवास करने वाले भगवान विट्ठल की उपासना क्यों नहीं करते ? कपोल पर सुगंधित तिलक, गले में माला, हाथों में फूलों की टोकरी लेकर प्रभु की अर्चना के लिए जाने का यह ढोंग कैसा ? तत्कालीन युग के समान ही आज का मनुष्य भी शरीर को तीर्थस्थान पर पवित्र जल से धोने से स्वयं को पुण्यवान समझता है | शरीर का ऊपरी हिस्सा धोने से क्या लाभ, अंत:करण भीतर से काला या मैला ही रहता हैं | कुछ लोक ईश्वर की आराधना करने का बहाना करते है और मौन धारण करते है परंतु ऐसे लोगों के इंद्रिय विषय-वासना के पीछे दौडते हैं | तुकाराम ऐसे लोगों के संबंध में कहते हैं - यह सब बाह्याचार से पेट भरने का मार्ग है इससे ईश्वर की प्राप्ति संभव नहीं है --

काय धोविले कातडे | काळ कूट भीतरी कुडे |
लावूनि बैसे टाळी | मन इंद्रिये मोकळी || [१३]

मध्ययुगीन भारतीय समाज में भगवे वस्त्र परिधान करके घूमने वाले साधुओं की मात्रा बढ गई थी | तुकाराम का मानना है कि, भगवे रंग के कपडों से ही यदि आत्मानुभव आता है तो सभी कुत्ते आत्मानुभवी हो जाते क्योंकि उन्हें तो भगवा रंग ईश्वर ने ही दिया है |जटा दाढी बढाने से ईश्वर मिलता तो सभी सियार ईश्वर को प्राप्त कर लेते | जमीन खोद यदि मुक्ति मिलती तो सभी चूहे मुक्त हो जाते | अन्तत: वे कहते है कि, ऐसे बाहरी रुप बनाकर शरीर को व्यर्थ में पीडा नही देनी चाहिए | जैसे --

नाही निर्मळ जीवन | काय करील साबण | [१४]

अर्थात - शरीर को बाहन से साबुन लगाकर धोने से क्या फायदा, जब तक अनतरमन मैला हो | पाप से भरे देह का विचार न करके जो भूमि सदैव पवित्र है उसे शुध्द करने से क्या लाभ है ? तुकाराम के युग में ढोंगी कीर्तनकार प्रभु-प्रेम का झूठा प्रदर्शन कर जनता को पथभ्रष्ट कर रहे थे | ये कीर्तनकार लम्बे तिलक, सिर पर टोपी, गले में माला, कानों में तुलसी पत्र खोसकर, चोटी में कुशा बांधकर नाक के अग्रभाग पर हाथ रखकर जप करने का ढोंग रचते दिखाई देते थे | वे कीर्तन करते हुए कभी रोते थे, कभी धरा पर गिर लोट लगाते थे | तुकाराम का कहना है कि, इनके ज्हदय में ईश्वर प्रेम नहीं है आँखों का पानी व्यर्थ क्यों बहाते हो ? उनकी यह समस्त क्रियाएँ पेट भने के लिए है, तुकाराम का दृढ विश्वास है कि, ऐसे ढोंगी लोगो को ईश्वर प्राप्ति संभव नहीं है | जैसे --

टिळा टोपी उंच दावी | जगी मी एक गोसावी |
तुका म्हंणे अवघे सोंग | तेथे कैचा पांडूरंग || [१५]

अत: ईश्वर की आराधना करते हुए मनुष्य को स्वयं के अंतरमन में झाँककर देखना आवश्यक है, केवल बाहरी प्रदर्शन से सच्चा साधक नहीं बन सकता | तुकाराम का कहना है कि जिसके मन का कुटिल भाव न हटा, उसके गले में माला पहनना ढोंग है | जिसमें धर्म, दया, क्षमा, शान्ति नहीं वह सच्चा साधक नहीं है | भक्ति की महिमा जिसे ज्ञात न हुई वह ब्रह्मज्ञान की बातें कह नही सकता |

जिसने अपना मन काबू में नही रखा वह समाज को आकृष्ट कैसे कर सकेगा | जब तक की इच्छा का हम त्याग नहीं कर सकते तब तक संसार, घर-गृहस्थी में सुख प्राप्त करते रहना तुकाराम अनुचित समझते है |[१६] धार्मिक आडंबर ने और धर्म में व्याप्त विशाक्त मानसिकताने हि सांप्रदायिक विवादो को बढावा दिया है | इसलिए वास्तविक मानव

ADAT VYAPARI EDUCATION SOCIETY'S DEGLOOR COLLEGE, DEGLOOR Dist.Nanded

धर्म लोगो तक काव्य के माध्यमसे पहूँचाने का कार्य संत तुकाराम ने किया है।

संदर्भ ग्रंथ

१) डॉ. नुले, कबीर और तुकाराम के काव्य में सामाजिकता - तुलनात्मक अध्ययन

२) प्रा.डॉ. वेदकुमार वेदालंकार - तुकाराम पदावली.

३) सं.डॉ. गोपालराव घेणारे सार्थ श्री तुकारामाची अभंग गाथा

४) डॉ. श्रीमती रमेश सेठ - तुकाराम एवं कबीर एक तुलनात्मक अध्ययन

५) संत ज्ञानेश्वर गाडे - संत कबीर और तुकाराम के काव्य में प्रासंगिकता.

❑❑❑

28

गुप्त काल में विज्ञान एवं तकनीकि का विकास

डॉ० राजेश कुमार यादव
असि० प्रो० प्रा० इतिहास,
राजकीय महाविद्यालय हसौर, बाराबंकी

****

सारांश

गुप्त काल में विज्ञान एवं तकनीक की विभिन्न शाखाओं का विकास हुआ। विज्ञान के क्षेत्र में सबसे अधिक प्रगति गणित एवं ज्योतिष विद्या में हुई। आर्यभटट् को गुप्त युग का सबसे महान वैज्ञानिक—गणितज्ञ एवं ज्योतिष माना गया है। उन्होंने अपने ग्रंथ आर्यभटट्रीय में यह प्रमाणित कर दिया कि पृथ्वी गोल है अपनी धुरी पर घूमती है तथा इसी के कारण ग्रहण लगता है। वाराहमिहिर ने भी ज्योतिष के क्षेत्र में महत्वपूर्ण सिद्धान्त प्रतिपादित किया। उन्होंने पंचसिद्धांतिका, वृहत्संहिता, वृहज्जातक एवं लघुजातक की रचना की। इनमें ज्योतिष सम्बन्धी महत्वपूर्ण बाते बतायी गयी है। इसके साथ ही इसी समय नागार्जुन जैसे आचार्य जिन्हें 'रस' चिकित्सा का अविष्कारकर्ता कहा गया है, ने यह बताया कि सोना, चाँदी इत्यादि खनिज पदार्थों के रासायनिक प्रयोग से रोगो की चिकित्सा की जा सकती है। इसके साथ ही साथ आयुर्वेद के प्रसिद्ध आचार्य धनवंतरि भी गुप्त काल (चन्द्रगुप्त द्वितीय) के समय में अपने ज्ञान से आयुर्वेद को बढावा दे रहे थे। धातुकला का सबसे बढ़िया नमूना मेहरौली का लौहस्तम्भ एवं सुल्तानगंज से प्राप्त बुद्ध की भव्य प्रतिमा एवं सोने चाँदी के सिक्के, मुहरें एवं आभूषण आदि गुप्त कालीन विज्ञान एवं तकनीकी उपलब्धियों की महत्वपूर्ण साक्ष्य प्रस्तुत करती है।

गुप्तकाल में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के विभिन्न शाखाओं का विकास हुआ। विज्ञान के क्षेत्र में सबसे

Dr. Anil Chidrawar
I/C Principal
A.V. Education Society's
Degloor College, Degloor Dist.Nanded